Division Bench





IN THE HIGH COURT OF CHHATTISGARH AT BILASPUR

WRIT PETITION (C) NO. 276 / 2013

PETITIONER

:M/s Master Engineering Concern
Proprietorship Firm
Office Address- Opp. LIC Building,
G.T. Road (West), Asansol
Represented by ProprietorMr. Kumud Ranjan Banerji,
S/o Late Kettuki Ranjan Banerji
Aged about 58 years,
R/o 50 GT Road (West), Apkar Garden
P.S- Asansol South, Dist- Asansol (WB)

Versus

RESPONDENTS



- Union of India
 Through General Manager,
 S.E.C Railway, Headquarters Office,
 Bilaspur (C.G)
- Divisional Railway ManagerSEC Railway, Raipur
- 3. Sr. Divisional Electrical Engineer(TRD)
 S.E.C Railway, Raipur
- 4. Asst. Divisional Finance Manager SEC Railway, Raipur
- 5. Oriental Bank of Commerce
 Branch Manager
 Asansol Branch, 122/130,
 G.T. Road (East), Asansol, (WB)

2



WRIT PETITION UNDER ARTICLE 226 OF THE CONSTITUTION OF INDIA FOR ISSUANCE OF A SUITABLE WRIT ORDER OF DIRECTION TO DO JUSTICE IN THE MATTER.



[The original order is in Hindi. This is the English translation of the same by Ms. Vanita Agrawal, and is being kept on the record]

HIGH COURT OF CHHATTISGARH AT BILASPUR DIVISION BENCH

CORAM:

HON'BLE SHRI YATINDRA SINGH, C.J. HON'BLE SHRI PRITINKER DIWAKER, J.

Writ Petition (Civil) No. 275 / 2013

Petitioner

M/s Master Engineering Concern

<u>Versus</u>

Respondents

Union of India & Ors.

Writ Petition (Civil) No. 276 / 2013

<u>Petitioner</u>

M/s Master Engineering Concern

<u>Versus</u>

Respondents

Union of India & Ors.

Writ Petition under Article 226 of Constitution of India

Appearance:

Mr. Prafull Bharat, counsel for the petitioner.

Mr. Abhishek Sinha, counsel for the respondents.

ORDER (28th February, 2013)

- 1. The South Eastern Central Railway (the Railway) had awarded two contracts on 04.09.2009 and 31.08.2009 to the petitioner for construction work, but as the work was not completed in time, the said time was extended from time to time. Finally, on 07.12.2012 the contract was cancelled for non-completion of work. Being aggrieved by it, these petitions have been filed before this Court.
- We have heard the counsel for the parties.
- 3. In paragraph 63 of the contract, it is mentioned that if any dispute arises between the parties then it can be resolved under clause 63 of the Contract. Even thereafter, if the dispute is not resolved then the





parties shall have right to resolve the said dispute through an arbitrator under clause 64.

- 4. In our opinion, if the petitioner so desires, then the dispute may be resolved under paragraph 63 and 64 of the Contract.
- 5. With the aforesaid observation, these writ petitions are dismissed.

)

Sd/-Chief Justice

Sd/-Pritinker Diwakar Judge



छत्तीसगढ उच्च न्यायालय, बिलासपुर (छ०ग०) युगल पीठ

युगल पीठ

माननीय मुख्य न्यायामूर्ति श्री यतीन्द्र सिंह माननीय न्यायामूर्ति श्री प्रीतिंकर दिवाकर

रिट याचिका (सिविल) क०- २७५/२०१३

याचिककर्ता पक्ष-

मेसर्स मास्टर इंजीनियरिंग कनसर्न

विरुद्घ

उत्तरवादी पक्ष-

यूनियन आफ इंडिया व अन्य

रिट याचिका (सिविल) क्र०- २७६/२०१३

याचिककर्ता पक्ष-

मेसर्स मास्टर इंजीनियरिंग कनसर्न

<u>विरुद्घ</u>

उत्तरवादी पक्ष-

यूनियन आफ इंडिया व अन्य

रिट याचिका अन्तर्गत अनुच्छेद २२६ भारतीय संविधान

उपस्थितिः याचिकाकर्तागण की ओर से श्री प्रफूल्ल भारत अधिवक्ता। उत्तरवादीगण की ओर से श्री अभिषेक सिन्हा, अधिवक्ता

आदेश (२८ फरवरी २०१३)

१. दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (रेल्वे) के द्वारा, याचिकाकर्ता को दो संविदाएँ क्रमशः दिनांक ०४.०९.२००९ एवं ३१.०८.२००९ को निर्माण कार्य कराने के लिये दिया गया था, किन्तु उसके द्वारा उक्त कार्य समय पर पूरा न करने से, समय-समय पर उक्त अवधि बढ़ा दी गई थी, अन्ततः दिनांक ०७.१२.२०१२ काम समाप्त न किये जाने से उसकी संविदा निरस्त कर दी गई, जिससे क्षुड्य होकर उक्त याचिकाएँ इस न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की गई हैं।



- २. हमनें पक्षों के अधिवक्ताओ को सुना।
- ३. संविदा में विवादों को आपस में तय करने के लिये, संविदा के खण्ड ६३ में लिखा हुआ है कि यदि पक्षों के बीच कोई विवाद होता है तो उसे संविदा के खण्ड ६३ के अन्तर्गत तय किया जा सकता है। यदि उसके उपरान्त भी विवाद समाप्त नहीं होता है तो पक्षों को इस बात का अधिकार है कि उक्त विवाद का निस्तारण संविदा के खण्ड ६४ के अन्दर पंचाट के माध्यम से तय किया जा सकता है।
- ४. हमारे विचार से, याचिकाकर्ता चाहे तो इस विवाद को संविदा के खण्ड ६३ एवं ६४ के अन्तर्गत तय करा सकता है।
- ५. उक्त याचिकाएँ, इसी टिप्पणी के साथ खारिज की जाती है।

Sd/-Chief Justice

Sd/-Pritinker Diwakar Judge

मधुलिका